महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक।।५४।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें यह सब ज्ञान देकर समझाया है। अब आगे उन पैगम्बरों की हकीकत बताती हूं, जिन्होंने अपने-अपने फिरके चला रखे हैं और बड़े कहलाते हैं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १३३ ।।

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान।।१।।

कुरान के बीच में नारी (दोजखी) फिरकों का बयान है, जो बहत्तर फिरकों में बंटकर परेशान हो रहे हैं।

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस।।२।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में शैतान की सूरत का बयान है। वहां लिखा है कि जल, थल सबमें अबलीस समाया है। दुनियां इसको अपना परमात्मा मानती है।

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल।।३।।

कुरान में लिखा है कि जंगलों से नदियां बहेंगी। उसका अर्थ है कि शून्य हृदय जंगल (वीरान) की तरह है। उससे निराकार के उपासकों के नित्य नए-नए फिरके (धर्म) चलेंगे।

ए जो कहे बनी–आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा।।४।।

यह आदम की औलाद, जिसे आदमी कहा है, सब निराकार के ही पूजक हैं। इनका सम्बन्ध (शादी) दुनियां को माया की आग से जलाने वाले अबलीस से हुआ है।

कह्या गधा जो दज्जालका, ऊंचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान।।५।।

कुरान में लिखा है कि वह शैतान अबलीस का बड़ा लम्बा-चौड़ा गधा होगा जो आसमान तक ऊंचा होगा। यही सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करने वाला मोह तत्व है (वैराट का रूप है)।

तो दुनियां ताबे दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।
दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर।।६।।

सारी दुनियां इसी शैतान अबलीस (नारद) के अधीन है। यह सबके दिलों पर बैठकर बादशाही कर रहा है। यह झूठी दुनियां शैतान अबलीस के बिना एक पल भी नहीं चल सकती है। दुनियां मन के अधीन है। मन वही शैतान है।

Nijanand App

राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत।
बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत।।७।।

अज्ञान की अंधेरी रात में सबने अपने अलग-अलग कर्मकाण्डों से धर्म चला रखे हैं। शैतान अबलीस (अहंकार) सबके दिलों पर बैठा है जो सत्य के ज्ञान को नहीं लेने देता।

ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता।।८।।

दुनियां के अन्दर जितने भी धर्म (सम्प्रदाय) जाहिरी को पूजने वाले हैं, उन सबकी हकीकत ऐसी ही है, अर्थात् वह सब सत्य मार्ग से दूर हैं।

जो हुए पैगंमर रात के, सुरिया न उलंघी किन।
जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन।।९।।

अज्ञान के अन्धकार में धर्मों के जो प्रवर्तक हुए हैं, उनमें से किसी ने भी सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) के आगे का ज्ञान नहीं दिया। जो जहां तक पहुंचा उसने वहीं तक का ज्ञान दिया।

पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक।
किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक।।१०।।

परमात्मा के ज्ञान का पैगाम देने वाले या अज्ञान के अन्धकार में बड़े कहलाने वाले किसी ने भी अक्षरधाम के पार पहुंचकर अखण्ड परमधाम या पारब्रह्म की पहचान नहीं दी।

तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर।
ए हुए जो बड़े रात के, तिन सबकी एह खबर।।११।।

जब किसी ने पारब्रह्म की तरफ की राह ही नहीं बताई तो वह अज्ञानता के पर्दे कैसे खोलते? अज्ञान के अन्धेरे में जितने बड़े धर्माचार्य हुए हैं, उन सबकी यही हकीकत है।

मनसूख कही जो किताबें, रात में आईं जे।
इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के।।१२।।

अज्ञान के अन्धकार में ज्ञान की जो किताबें रात में उतरी थीं, उनको रद्द कर दिया। जो चमत्कार चाहते थे, उन सबके धर्मों को रद्द कर दिया।

एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक।।१३।।

पुरानी किताबों (अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान) को रद्द किया और उन्हीं नामों को रास, प्रकास, कलस और सनंध की नई किताबें दीं। उन पुरानी किताबों के मानने वालों की जमातों को जो कर्मकाण्ड पर चलते थे, रद्द कर दिया। अब बताओ, उन रूढ़िवादी लोगों के संशय कैसे मिटेंगे?

करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैंगंमर ल्याए।
नफा पाया तासों खलकों, आखिर चारों किताब पढ़ाए।।१४।।

पुरानी किताबों को रद्दकर उन्हीं पैगम्बरों के नाम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी नई किताबें लाए, जिससे सारे संसार को लाभ हुआ। उन्होंने सारे संसार को चारों किताबों का ज्ञान दिया।

Nijanand App

देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक।
सो लिख्या कौल तौरेत में, जासों नफा लेसी खलक।। १५ ।।

अब उन किताबों का कैसे परिवर्तन किया और किस तरह से सच्चे ज्ञान वाली नई किताबें दीं, इसका ब्यौरा कलस किताब में है, जिसे पढ़कर सारी दुनियां लाभ लेगी।

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए।
एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए।। १६ ।।

अब कौन सी किताब को रद्दकर कौन सी सच्ची किताब दी है, इसको झूठी दुनियां वाले कैसे समझें? इन किताबों के वारिस मोमिन हैं। इनके बिना और जागृत बुद्धि के बिना एक शब्द भी समझ में नहीं आ सकता।

याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर।
ए जो कही बड़ाई इनों की, सो सब बीच आखिर।। १७ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान किताबों को रास, प्रकास, कलस और सनंध के नाम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी लाए। इनकी ही सब जगह महिमा गाई है और आखिरत के वक्त के यही मालिक हैं।

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन।
तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन।। १८ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं। उनकी तारतम वाणी की बूंदें जिन्होंने ली हैं, वह सभी ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी का पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं। उन्हीं सबमें सूर्य के समान अखण्ड ज्ञान दिया है।

जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर।
जापर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर।। १९ ।।

पैगम्बर ने अन्य किताबों में तथा कुरान में जिनकी बड़ाई लिखी है, यह वही आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज को फजर के फल देने का अधिकार दिया गया था। सबको फजर के ज्ञान का सुख देंगे।

कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम।
कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम।। २० ।।

संसार में कई बड़े-बड़े पैगम्बर हो गए हैं, परन्तु उन सबकी शक्ति आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के सामने समाप्त हो जाती है। वैसे सभी पैगम्बरों के फिरके मर्द मोमिनों के नाजी फिरके का दावा लेते हैं।

सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरो में नाजी एक।
ए कौन जाने बिना अर्स दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक।। २१ ।।

सभी पैगम्बरों के फिरकों में एक नाजी फिरका होगा, जिसे हादी की हिदायत होगी, ऐसा ग्रन्थों में लिखा है, परन्तु इस रहस्य को बिना मोमिनों के जिनके दिल को अर्श कहा है, कौन जान सकता है? आखिरी नबी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी और मोमिनों का नाजी फिरका नेकचलन वाला होगा।

Nijanand App

नेक सुनो तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर।। २२ ।।

हे मोमिनो! जो कुरान की तफसीर में लिखा है। वही कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है। उसे समझकर अपने दिल के संशय मिटाकर पाक हो जाओ।

रसूलें कह्या जालूत को, तुम में पीछे मूसा के।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए।। २३ ।।

रसूल साहब ने जालूत से पूछा कि मूसा पैगम्बर के बाद कितने फिरके हुए हैं? मुझे इसकी खबर दो।

तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब।
सो ए देख के कहोंगा, करो जिन सिताब।। २४ ।।

तब जालूत ने कहा कि मैं किताब को देखकर बताऊंगा, जल्दी मत करो।

तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए।
तब क्यों करो इमामत, देखो दिल सों ल्याए।। २५ ।।

तब रसूल साहब ने कहा कि किताब जल जाए या चोरी चली जाए तो समाज की नेतागिरी कैसे करोगे? यह अपने दिल से बताओ।

ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को।
कहे फिरके पैंतालीस, जानिके रसूल सों।। २६ ।।

ईसा पैगम्बर के बाद कितने फिरके हुए, रसूल साहब ने जानिक से पूछा। जानिक ने रसूल साहब को उत्तर दिया कि पैंतालीस फिरके हुए।

तब फेर कह्या रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन।। २७ ।।

फिर रसूल साहब ने कहा इसकी खबर तुम लोगों में से किसी को नहीं है। इनकी किताबों के अर्थ मैं अच्छी तरह से जानता हूं।

पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक।
और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक।। २८ ।।

मूसा पैगम्बर के पीछे इकहत्तर फिरके हुए, जिसमें एक नाजी फिरका हुआ। सत्तर दोजखी (नारी) कहे हैं। इस बात को विचार करके समझो।

बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से।। २९ ।।

ईसा पैगम्बर के बहत्तर फिरके हुए। उनमें भी एक फिरका मर्द मोमिनों का है और इकहत्तर फिरके नारी अर्थात् दोजखी हैं। ऐसा रसूल साहब ने जानिक से कहा।

Nijanand App

यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक।। ३० ।।

इसी तरह से तिहत्तर फिरके मेरे होंगे जिसमें बहत्तर नारी (दोजखी) होंगे और एक फिरका मर्द मोमिनों का होगा। उस एक फिरके को पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होगा, जो सबसे अच्छा होगा।

मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्सका जे।। ३१ ।।

मूसा, ईसा और रसूल सभी ने अपने नारी (दोजखी) फिरके बतलाए। सभी ने अपने में एक नाजी फिरके का होना बताया। यह खासल-खास परमधाम का होगा।

गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान।
कहे ताबे दज्जाल के, जलसी जो कुफरान।। ३२ ।।

और भी कितने धर्म-सम्प्रदाय हैं, जो यहूदियों के अधीन हैं, जिन सभी को दोजख की अग्नि में जलना होगा।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत।
वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी कयामत।। ३३ ।।

इस तरह से शुरू से ही एक मर्द मोमिनों के फिरके का बयान है। इसको ही आखिर के वक्त का लाभ मिलने वाला है। इसको ही श्री प्राणनाथजी अपना (नबी का) ज्ञान दिखाकर ब्रह्माण्ड को कायम करेंगे।

लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत।
एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित।। ३४ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में कुरान के भेद खुलने का और नबी रसूल ने जो कहा है, वह सत्य है इसका बयान लिखा है। यह बातें तब सत्य होंगी, जब सब दुनियां एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी।

कहे रसूल कौल हकके, सबे करों एक दीन।
सो ए कौल तोड़्या दुनी, जिनों रह्या ना आकीन।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कहा है कि खुदा ने वायदा किया कि मैं आखिर में आकर सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाऊंगा। दुनियां में जिन्हें विश्वास नहीं रहा, उन्होंने इन वचनों को तोड़ दिया।

माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका।
नजर बांध फना बीच, हुए जिदकर तफरका।। ३६ ।।

ऊपर के अर्थ लेने से अखण्ड परमधाम के ज्ञान तक नहीं पहुंचा जा सकता, इसलिए झूठे संसार के अन्दर लड़-झगड़कर अलग-अलग सम्प्रदाय बन गए, जो केवल दुनियां की ख्वाहिश रखते हैं।

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन।
खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन।। ३७ ।।

एक नाजी फिरके को ही श्री राजजी महाराज ने बातूनी ज्ञान दिया और आत्मदृष्टि खोलकर उन्हें परमधाम के मूल तन दिखाए।

Nijanand App

कौल किए रूहों सों, उतरते हक।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय जो रूहों से वायदे किए थे, उन्हें यह झूठी दुनियां के लोग अपना समझ बैठे हैं।

बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें।। ३९ ।।

परमधाम की रूहों की महिमा को दुनियां वाले अपने सिर पर लेते हैं और एक नाजी फिरके की सिफत को सभी बहत्तर नारी फिरके लिए बैठे हैं, अर्थात् सब कहते हैं कि हमारा ही नाजी फिरका है।

जबराईल जित अटक्या, आगूं पोहोंच्या नाहें।
सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर माहें।। ४० ।।

जहां से जबराईल फरिश्ता आगे नहीं जा सका, अटक गया। यह दुनियां वाले जानते हैं कि हम उस अखण्ड घर को जाएंगे।

दुनियां जो तिलसम की, आगूं होने चाहे तिन।
जो ल्याया रूहल–अमीन, कलाम अल्ला रोसन।। ४१ ।।

यह जो झूठी दुनियां वाले हैं, वह उन मोमिनों जिनके वास्ते रसूल साहब पारब्रह्म की वाणी को लेकर आए हैं, के आगे होना चाहते हैं।

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात।
सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुल–सरात।। ४२ ।।

अज्ञान के अंधेरे में दुनियां वाले ऊपर का अर्थ लेते हैं, इसलिए इनको सीधा रास्ता दिखाई नहीं देता और मृत्युलोक के अन्दर कर्मकाण्ड के चक्कर में फंसते हैं।

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत।
ऊपर फना सब फरिस्ते, ए जो कह्या मलकूत।। ४३ ।।

इस संसार के चौदह लोक में जो कुछ दिखाई देता है, वह सारी दुनियां मिट जाने वाली है। इसके ऊपर सभी देवी-देवता, बैकुण्ठ तक मिट जाने वाले हैं।

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो सुंन।
ए जुलमत तिन बीचमें, चौदे तबक पलन।। ४४ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर जो निराकार शून्य मण्डल है, उसको ही जुलमत कहते हैं, जिसमें चौदह तबक का ब्रह्माण्ड एक झूले की तरह झूलता है।

ए लिख्या दूसरे सिपारे, आयत कुरान के माहें।
सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए तांहें।। ४५ ।।

यह कुरान के दूसरे सिपारे सयकूल में लिखा है, जिसको संशय हो उसे खोलकर देख ले।

Nijanand App

ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया।
सो ए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया।।४६।।

मुहम्मद की जमात (मोमिनों) को श्री राजजी महाराज ने यह झूठा खेल दिखाया, इसलिए अपने हुकम से कुंन शब्द कहकर खेल बनाया।

ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात।
ए गुम हुए ढूंढ़ें फना बीच, आड़ी हुई जुलमात।।४७।।

इसे छल का खेल इसलिए कहा है कि अज्ञान के अंधेरे में रास्ता दिखाई नहीं देता। इस मिटने वाले संसार में सभी लोग गुम हो गए हैं और ढूंढ़ते फिरते हैं। उनके आगे निराकार का परदा पड़ा है, इसलिए अखण्ड घर का रास्ता नहीं सूझता।

ढूंढ़्या चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ।।४८।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में ढूंढ़ा, पर घर की तरफ बताने वाला कोई न मिला। अखण्ड घर की दुनियां के अन्दर किसी ने एक हरफ भी नहीं बताया।

और सुरिया जो सितारा, कह्या उलंघा न किन।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूं छोड़ी न सरे सुंन।।४९।।

जो सुरिया सितारा, अर्थात् ज्योति स्वरूप है, इसके आगे तो कोई जा ही नहीं सका। यह बात कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखी है कि कोई शून्य मण्डल को नहीं छोड़ सका।

मेयराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान।।५०।।

मुहम्मद साहब को दर्शन हुआ और उन्होंने कई बातें जाहिरी बताईं। श्री श्यामाजी और रूहों की पहचान के वास्ते हुकम से बहुत सी बातें छिपाकर रखीं।

तेहेतसरा से हवा लग, एक फरिस्ता खड़ा इन कद।
ए बड़का सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद।।५१।।

पाताल से निराकार तक एक बड़ा लम्बा-चौड़ा फरिश्ता, अर्थात् विराट स्वरूप (आदि नारायण) खड़ा है, जिसका सिर निराकार तक लगा है। यही सबका बड़ा नारायण है।

इन फरिस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोंहों।
मोंह मोंह कई जुबान, ए देखो इसारत फरिस्तों।।५२।।

इस फरिश्ते के कई सिर हैं और हर सिर में कई मुख। हर मुख में कई जबानें हैं। इस तरह से देवी-देवताओं की हकीकत इशारतों में लिखी हैं। सब देवी-देवता ज्योति स्वरूप के मुख हैं और सब धर्म ग्रन्थ उसकी जबान हैं।

एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएं जाकी नाकमें।
तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोंह निकसें।।५३।।

इस फरिश्ते से भी बड़े एक और फरिश्ते का बयान कहा है, जिसकी नाक में से ऐसे कई बड़े फरिश्ते हैं, जो उसकी नाक से अन्दर घुस जाते हैं और अन्दर घूमकर बाहर निकल आते हैं, फिर भी उसे कुछ सुध नहीं होती (यह आदि नारायण का विराट स्वरूप है जो अर्जुन को दिखाया था)।

Nijanand App

ए मसनंद मलकूत की, फरिस्ता एक पातसाह।
कोई बुजरक पोहोंचे इनलों, और पांउं कटे पुल सरात राह।।५४ ।।

यह बड़ा फरिश्ता ही बैकुण्ठ की बादशाही कर रहा है। कोई ज्ञानी (सयाने लोग) ही बैकुण्ठ तक पहुंच पाते हैं और बाकी कर्मकाण्ड की धार में कट जाते हैं।

जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद।
सो ले सरीयत चढ़ ना सके, छूटे ना फना वजूद।।५५ ।।

जो रूह मृत्युलोक में आकर झूठे तन धारण करती है, वह शरीयत (कर्मकाण्ड) को लेकर शरीर को छोड़कर आगे नहीं जा सकती।

ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए।
करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस न ऊंचा चढ़ाए।।५६ ।।

कोई तरीकत का ज्ञान लेकर बैकुण्ठ तक पहुंचते हैं। वह भी रास्ता किसी से नहीं लिया जाता। वह अपने वास्ते दौड़ तो बहुत करते हैं, परन्तु इस झूठे तन के सुख के लिए ऊंचे नहीं चढ़ पाते हैं।

ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना।
ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना।।५७ ।।

यह सब संसार में निराकार और ब्रह्माण्ड सहित नाशवान कहे गए हैं। इनको आजूज-माजूज (रात-दिन) आयु समाप्त कर खा जाएंगे और नष्ट कर देंगे।

मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार।।५८ ।।

शरीयत के अन्दर शोर मचाकर मारफत की बातें कैसे बताएं? इन दुनियां वालों ने परमात्मा के नाम से बेशुमार सम्प्रदाय खोल रखे हैं।

कोई कहे विष्णु नारायन, कोई अरहंत बतावे।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे।।५९ ।।

कोई इस परमात्मा को आदि नारायण, कोई विष्णु, कोई अरहंत बताते हैं। कोई देवी-देवता, आग, पानी, पत्थर की पूजा करवाते हैं।

कोई कहे बेचून है, और बेचगून।
भी कहे बेसबी है, और बेनिमून।।६० ।।

कोई बेचून, बेचगून, बेसबी और बेनिमून कहता है।

कोई कहे निराकार है, और निरंजन।
कोई कहे अहं बका, सब में ब्रह्म निरगुन।।६१ ।।

कोई निराकार, कोई निरंजन, कोई ब्रह्म को निर्गुण तथा सबमें व्यापक तथा कोई अपने को अखण्ड ब्रह्म (अहं ब्रह्माऽस्मि) बताते हैं।

Nijanand App

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात।
कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात।।६२ ।।

यह जो मोह तत्व पैदा हुआ है, इसी को जुलमत, तारीकी, लामकान और दूसरे वचनों में हवा कहते हैं। यहां से सारे संसार (माया) की उत्पत्ति होती है।

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह।
तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी–आदम पूजे सब हवाए।।६३ ।।

यह अज्ञान की दुनियां ऐसी उलझी हुई है कि यह पारब्रह्म का रास्ता नहीं पाती। कुरान के उन्नीसवें सिपारे में लिखा है कि आदम की औलाद हवा (निराकार) को पूजेगी।

दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर।
ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवे पैगंमर।।६४ ।।

दुनियां वालों के ईमान के ऊपर निराकार का ताला पड़ा होगा। जो इसे खोलेगा वही सिरदार (प्रधान) कहलाएगा। जो इस निराकार को पीठ देकर आगे जाए, वही सच्चा पैगम्बर है।

चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुंन।।६५ ।।

माया के अन्दर की चार चीजों (मिट्टी, पानी, पत्थर, आग) की सभी पूजा करते हैं। कई लोग आकाश की, निराकर, हवा, ला और शून्य नाम से पूजा करते हैं।

ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर।।६६ ।।

जिसको निराकार, सुन्य, जुलमत कहा है, वही परदे का रूप है, जिसके अंधेरे में लोग भटकते हैं। इस निराकार ने दुनियां को चारों तरफ से घेर रखा है।

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक।
काहूं न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक।।६७ ।।

यह सब अंधेरे में है। किसी को पारब्रह्म की सुध नहीं है। किसी को अखण्ड घर का पता नहीं लगा, जबकि इस अंधेरे में बड़े-बड़े सयाने लोग हो गए।

तिन पर नूर अछर, जो कायम जबरूत।
तापर अर्स अजीम, जो कह्या बका हाहूत।।६८ ।।

निराकार के ऊपर अक्षरधाम है जो जबरूत कहलाता है। उसके ऊपर परमधाम है, जिसको अखण्ड मूल-मिलावा कहते हैं।

ए जो ठौर दोऊ कायम, कहे अर्स हक।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक।।६९ ।।

यह अक्षरधाम और परमधाम अखण्ड कहे गए हैं। यह श्री राजजी महाराज के अर्श कहे गए हैं। यह झूठी दुनियां वाले अखण्ड घर परमधाम और अक्षरधाम को तन के अन्दर ही मान बैठे हैं।

Nijanand App

फरिस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार।
सो माहें पैठ ना सक्या, अर्स अजीम द्वार।।७० ।।

फरिश्तों में सिरदार (प्रधान) जबराईल फरिश्ता है। वह भी परमधाम के दरवाजे के अन्दर नहीं जा सका।

ना तो महंमद की हिमायतें, आगूं चल्या एक कदम।
तिन राह पांच सै साल की, काटी माहें दम।।७१ ।।

वरना मुहम्मद साहब की मदद से अक्षरधाम को छोड़कर एक कदम आगे गया और पांच सौ साल का रास्ता एक क्षण में पूरा कर दिया।

आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाए मेरे पर।
सो ए बीच जाए न सक्या, ए जो अर्स अकबर।।७२ ।।

आगे चलने पर जबराईल फरिश्ता कहता है कि आगे जाने पर मेरे पर जल जाएंगे, इसलिए महान् परमधाम के अन्दर वह नहीं जा सका।

ए साहेदी लिखी जाहेर, मेयराज नामें माहें।
सरहद जबरूत की, फरिस्ते छोड़ी नाहें।।७३ ।।

मेयराजनामे में स्पष्ट लिखा है कि जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम की सरहद छोड़ नहीं सका।

गुनाह पोंहोच्या तिन अर्समें, इन दरगाह रूहन।
दिल हकीकी ए कहे, अर्स कलूब मोमिन।।७४ ।।

ऐसे परमधाम में रूहों के ऊपर खेल मांगने का गुनाह लगा। उन मोमिनों के दिलों को ही हकीकी कहा है और श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है।

खासों में खासे कहे, रबानी उमत।
खिलवत हक हादी रूहें, अर्स हक वाहेदत।।७५ ।।

यह मोमिन ही श्री राजजी महाराज की जमात और उनके खासलखास बन्दे कहलाते हैं। परमधाम के मूल-मिलावा में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें सब एकतन (वाहेदत) कहलाते हैं।

कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन।
अव्वल बीच या आखिर, खुले ना रसूल बिन।।७६ ।।

आयतों और हदीसों में कहा है कि परमधाम के दरवाजे आज तक किसी ने नहीं खोले। अव्वल, बीच और आखिर तक रसूल साहब के बिना इसके दरवाजे कोई खोल नहीं सकता।

जंजीर द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद।
दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद।।७७ ।।

सबसे पहले रसूल साहब ने ही आकर अखण्ड परमधाम की पहचान बताई। यह हदीसों में लिखा है, जिसे देखकर अपने दिल के संशय मिटा लो।

Nijanand App

जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए।
गोस कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत सिर सब के।।७८ ।।

जितने भी पैगम्बर, रसूल, नबी, अंबिए, औलिए, गौस, कुतुब हुए हैं, उन सबके ऊपर रसूल साहब का ज्ञान है।

कई बड़े कहावे पीर फकीर, कई आरिफ उलमा।
यार असहाब कई खलीफे, हादी महंमद है सब का।।७९ ।।

संसार में कई बड़े-बड़े पीर, फकीर, आरिफ, उलमा, यार, असहाब, खलीफा कहलाए हैं, परन्तु उन सबको हिदायत रसूल साहब की है (हादी की है)।

रसूलें बुजरकी अपनी, दई कई जहूदों को।
पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों।।८० ।।

रसूल साहब ने अपनी बुजरकी का ज्ञान कई यहूदियों को भी दिया, पर वह अपनी मान-प्रतिष्ठा छोड़कर रसूल साहब के चरणों में नहीं आए।

कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे किताब।
होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब।।८१ ।।

कई अपने को ज्ञान का मालिक बताते हैं। कई अपने को धर्मग्रन्थों के मालिक बताते हैं, परन्तु यह काम आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कोई कर नहीं सकता।

जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के माहें।
दिन ऊगे महंमद बुर्राक के, आगूं दौड़े सब जाएं।।८२ ।।

यहूदियों के मूसा, ईसाइयों के ईसा अज्ञान के अन्धकार में पैगम्बर कहलाए। आखिर में ज्ञान के सूर्य श्री प्राणनाथजी के आने पर सब दौड़-दौड़कर उनकी शरण में आए।

देखो नामे मेयराज में, किताब सिकंदर।
अस्वार महंमद की जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर।।८३ ।।

मेयराजनामा की किताब में देखो। यह बड़ी महान् है। उसमें लिखा है कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की सवारी के आगे कुल पैगम्बर पैदल चलेंगे।

बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए।
जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए।।८४ ।।

यह आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज छोटे-बड़े सभी जीवों को आठ बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

या दोऊ गिरो दोऊ असों की, जो बका ठौर हैं दोए।
फरिस्ते रूहें उतरीं लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए।।८५ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें दो अखण्ड घरों से खेल में उतरी हैं। उन्हें भी हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी महाराज अपने-अपने घरों पहुचाएंगे।

Nijanand App

एही फजर दिन मारफत, सब आवें माहें दीन।
तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन।। ८६ ।।

इसी को ही मारफत के ज्ञान का सवेरा कहा है। जब सब दुनियां एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आ जाएगी, तभी सबका शैतान (मन) मर जाएगा और सबको यकीन आया समझना।

एक कुरान का माजजा, और नबीकी नबुवत।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित।। ८७ ।।

तभी कुरान की बातें सत्य हैं तथा रसूल साहब की पैगम्बरी सत्य है। जैसा पहले कहा है, वैसा सत्य सिद्ध होगा।

आयतें हदीसें सब कहे, खुदा एक महंमद बरहक।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक।। ८८ ।।

कुरान की आयतें और हदीसें सभी कहती हैं कि पारब्रह्म सारे जगत का मालिक एक है। मुहम्मद ने जो कहा वह सत्य है। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना आगे-पीछे और कोई नहीं है।

ए जो कहे लाखों हो गए, रात में पैगंमर।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर।। ८९ ।।

कुरान में लिखा है कि रात में लाखों पैगम्बर हो गए। श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब खुदा का ज्ञान देने वाले इतने हो गए तो ज्ञान का सवेरा क्यों नहीं हुआ?

कहे लाखों पैगंमर हो गए, कई और लिखे बुजरक।
किन बका पट न खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक।। ९० ।।

जब यह कहते हैं कि लाखों पैगम्बर हो गए और कई बुजरक हो गए, परन्तु किसी ने अखण्ड परमधाम का दरवाजा नहीं खोला, तो अब बताओ कि पारब्रह्म का पैगाम किसने किसको दिया?

बका तरफ न पाई काहूने, तो द्वार खोले क्यों कर।
क्यों बका बिन बड़े कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कही पैगंमर।। ९१ ।।

किसी को अखण्ड घर की खबर ही नहीं मिली, तो दरवाजा कैसे खोलते? अंधेरे में बिना अखण्ड घर के ज्ञान के अपने आप को बड़ा कैसे कहलवाते हैं, जब किसी पैगम्बर ने पारब्रह्म के ठिकाने को बताया ही नहीं।

मेयराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर।
मेयराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर।। ९२ ।।

पारब्रह्म का मेयराज (दर्शन) एक रसूल साहब को ही हुआ। दूसरे किसी पैगम्बर को हुआ ही नहीं। यदि दर्शन ही नहीं हुआ, तो फिर बिना दर्शन के पैगाम कैसे दे सकते हैं?

अजूं खड़ियां इनों की उमतें, पूजें पानी आग पत्थर।
सो तो कही सब रानियां, मांगे माजजे किया कुफर।। ९३ ।।

आज भी दुनियां में इनकी जमातें पानी, पत्थर, आग को पूजती हैं, इसलिए इन सबको रद्द कर दिया गया है, क्योंकि यह झूठे संसार की ही मांग करते थे।

Nijanand App

लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास।
तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास।। ९४ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि नूह पैगम्बर के समय में सभी काफिर थे। ब्रह्मसृष्टि या मोमिन कोई नहीं था।

कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान।
आगूं अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान।। ९५ ।।

यह भी लिखा है कि मोमिनों की एक जमात थी जो सृष्टि के आदि से नूह-तूफान के महाप्रलय तक के समय केवल एक जमात मोमिनों की आई, जो बृज में रही। फिर उसके बाद श्री देवचन्द्रजी के आने तक सब झूठे संसार के लोग थे।

मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम।
सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त तमाम।। ९६ ।।

नूह पैगम्बर के घर मोमिनों की जमात में एक श्री कृष्ण थे, जिनके सहारे से चालीस जुत्थ बारह हजार सखियां योगमाया की किश्ती से पार हो गईं।

कहे एही चालीस तूबे पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम।
यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम।। ९७ ।।

यही चालीस जुत्थ योगमाया की नाव में बैठकर नित्य वृंदावन में वृक्ष के नीचे पहुंचे। इनकी ही सिफत कुरान में गाई गई है। इनकी गिनती किसी प्रकार से कम नहीं हो सकती।

आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल।
सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल।। ९८ ।।

शुरू से लेकर नूह-तूफान के समय तक एक ही जमात मोमिनों की थी, जो योगमाया की किश्ती पर बैठकर पार हो गई और बाकी जहान का प्रलय हो गया।

सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद।
आखिर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद।। ९९ ।।

यही जमात आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की है। ऐसा रसूल साहब ने अपनी हदीस में लिखा है। उन्होंने यह भी कहा है कि आखिर में नूह पैगम्बर की इस जमात की साक्षी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी देंगे।

इबराहीम के अमल में, ना इसलाम गिरो दीन।
कही एक लड़की निमरूद की, कहू ल्याई थी आकीन।। १०० ।।

इब्राहीम पैगम्बर जब हुए हैं तब कोई इस्लाम धर्म नहीं था और न ब्रह्मसृष्टियों की जमात ही उतरी थी। इब्राहीम पैगम्बर पर एक निमरूद बादशाह की लड़की ईमान लाई थी।

लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें।
और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी जहूदोंने।। १०१ ।।

कुरान के एक सिपारे में लिखा है कि इब्राहीम के समय में कोई मुसलमान नहीं था, इसलिए उनके वारिस यहूदी हुए।

Nijanand App

मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत।
आसमान जिमी या जो कछू, और न काहू नसीहत।। १०२ ।।

कुरान के इस रहस्य को देखो कि मुहम्मद साहब ने सबको हिदायत दी है, खुदा के घर का रास्ता बताया। आसमान और जमीन के बीच जो कुछ भी है ऐसा ज्ञान और कहीं नहीं है।

ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक होए उमत।। १०३ ।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी सभी को ज्ञान देंगी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने लिखकर भेज दिया कि मेरी जमात परेशान क्यों होती है?

जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर।
भाई महंमद अर्स खिलवत, नसीहत और न इन बिगर।। १०४ ।।

आसमान और जमीन के बीच जो भी लोग रहते हैं, उन सबको इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मिलेगा। मुहम्मद साहब के भाई मोमिन हैं, अर्श की खिलवत और मूल-मिलावा की बातों की पहचान श्री प्राणनाथजी के बिना और कौन दे सकेगा?

करी अगली किताबें मनसूख, कहे जमाने रद।
ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जो लों आए महंमद।। १०५ ।।

इसलिए पहले आई किताबें अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान के ज्ञान को रद्द किया और उनकी शरीयत को रद्द किया। रास लीला के बाद में जब तक श्री श्यामाजी महारानी (मलकी मुहम्मद) और श्री प्राणनाथजी (हकी मुहम्मद) नहीं आए, कोई भी मोमिन नहीं थे।

कह्या तब ल्याए कई ईमान, कई रहे ईमान बिगर।
केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माईल पर।। १०६ ।।

श्री प्राणनाथजी (इमाम मेंहेंदी) जब आए, उस समय कई लोग ईमान लाए और कई ईमान के बिना रह गए। इसके बाद कई लोग बिहारीजी (इस्माईल पैगम्बर) पर ईमान लाए।

सो ईमान तोलों चल्या, एहिया आया बखत जिन।
तब मजाजी दुनी का, ईमान न रह्या किन।। १०७ ।।

यह ईमान सुन्दरसाथ के बीच में सूरत तक चला, जब तक श्री इन्द्रावतीजी को एहिया का खिताब मिल गया। फिर झूठी दुनियां का ईमान किसी का भी कायम नहीं रहा।

सो एहिया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान।
कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान।। १०८ ।।

यही एहिया पैगम्बर श्री मेहराज ठाकुर ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) पर ईमान लाए और उन्होंने ही निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना की। इसको दिल से विचारकर देखो।

दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखिर।
ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फंदे बीच माएनों ऊपर।। १०९ ।।

दुनियां कहती है कि यह पैगम्बर पहले हो गए हैं। इनकी सिफतें आखिर में होनी हैं। यह अखण्ड की बातूनी बातों को दुनियां वाले कैसे समझें? क्योंकि यह वह जाहिर मायनों के ऊपर ही ऊपर फंसे हैं, जबकि यह सब भविष्यवाणी प्राणनाथजी के लिए है।

Nijanand App

जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम और बातन।
सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन।। ११० ।।

कुरान के जितनी भी भविष्यवाणी या बातूनी मायने हैं, पढ़े-लिखे लोग किस्सा समझकर उसे गुजरे जमाने पर घटा देते हैं।

किस्से आखिरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात।
सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रानी बीच जुलमात।। १११ ।।

कुरान के यह किस्से आखिरत के वक्त के लिए हैं, जिनके खुलने से दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिलेगी। यह पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह किस्से हो गए हैं, इसलिए दुनियां के इन लोगों को निराकार के नर्कों में धकेल दिया।

जो कहे किस्से हो गए, कहे दाग देऊं तिन नाक।
लिख्या सिपारे उनतीस में, राह गुम हुआ नापाक।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो यह कहते हैं कि यह किस्से हो गए हैं, उनकी नाक को दाग दूं, जला दूं (अग्नि की गर्म सलाखों से)। यह कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखा है। ऐसे नाकाम लोग रास्ता न मिलने से भटक गए हैं।

लिख्या नूर नामें मिने, रूह मुरग किया गुसल।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खड़े हुए पैगंमर मिल।। ११३ ।।

नूरनामा में लिखा है कि श्री श्यामा महारानी की आत्मा ने मोह सागर में गुसल किया (तन धारण किया)। और अपने पर (पंख) झटके। उनके परों से बूंदें गिरीं। यही बूंदें पैगम्बर बन गए, अर्थात् श्री श्यामाजी महारानी सबको लेकर खेल में उतरीं और उनको मनुष्य के तन मिले।

सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदें नूर।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर।। ११४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की रूह को ही अर्श-ए-अजीम का मुर्ग कहा है, जहां से नूर की बूंदें, अर्थात् जिससे अखण्ड परमधाम के मोमिन आए और सारे संसार को अखण्ड ज्ञान देने लगे, तो पैगम्बर बन गए।

लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के।
पैगाम दिए इनों आखिर, जो बका पट महंमदें खोले।। ११५ ।।

लिखा है कि इन बूंदों के एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर बने, जिनके वास्ते अखण्ड परमधाम के पट श्री प्राणनाथजी ने खोले। अब यही मोमिन संसार को परमधाम का ज्ञान देते हैं।

जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अबलो रात।
तो तबहीं बका दिन कर, उड़ाए देते जुलमात।। ११६ ।।

यदि इतने पैगम्बर पहले हो गए होते तो अज्ञान और अंधेरा न रहता। तो उसी समय ज्ञान का उजाला हो जाता और निराकार का परदा हट जाता।

Nijanand App

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास।। ११७ ।।

इसी मोमिन की जमात को खासलखास आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात कहा है। इनकी सिफत आयतों और हदीसों में जगह-जगह लिखी है। यह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, जो परमधाम में रहते हैं।

नूर–अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी।। ११८ ।।

इन्हीं को श्री श्यामाजी महारानी ने अपने नूर के अंग बताया है और अपने को खुदा के नूर का अंग बताया है। इन मोमिनों का दावा झूठी अक्ल वाले लिए बैठे हैं। जरा इनकी अक्ल पर विचार करो।

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर।। ११९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और ब्रह्मसृष्टियां श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं। झूठी दुनियां वालों ने जो इनका दावा ले रखा है, वह सच्चाई से सदा बहुत दूर रहते हैं।

ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत।। १२० ।।

इसलिए जो कुछ कुरान में कहा था, वह सब सारी महिमा आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए है। जिनके दिल झूठे हैं और जिनको मारफत का ज्ञान नहीं मिला, वह इस बात को कैसे समझें?

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना।। १२१ ।।

जब तक कुरान के ऊपरी अर्थ को लेंगे, तब तक वह मिटने वाले संसार को नहीं छोड़ सकते। श्री राजजी और श्री श्यामाजी की पहचान के बिना दुनियां सपने की तरह नष्ट हो जाती है।

महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर।
हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की मेहर की बरसात होती है। उन्होंने मामिनों के लिए परमधाम के दरवाजे खोल रखे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

बाब तीनों गिरोके फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जब तक अखण्ड परमधाम के दरवाजे नहीं खोले, तब तक मिटने वाले दुनियां के लोग अन्धकार में ही भटकते रहे। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मारफत के ज्ञान से अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया और मोमिनों के वास्ते परमधाम के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App